पेपर : बी.ए. प्रोग्राम सेमेस्टर 1

विषय :हिंदी भाषा और साहित्य (हिंदी-ग)

This question paper contains 2 printed pages. *Your Roll No. .....*

Sl. No. of Ques. Paper	**: 3707**
Unique Paper Code	**: 62051104**
Name of Paper	**: M.I.L. Hindi–C**
Name of Course	**: B.A. (Prog.)**
Semester	**: I**
Duration	**: 3 hours**
Maximum Marks	**: 75**

FC

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 10×3=30

(क) कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो न निराश करो मन को।

अथवा

देखा आँगन के कोने में कई नवागत
छोटी-छोटी छाता ताने खड़े हैं।
छाता कहूँ कि विजय-पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्हीं, प्यारी—
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे—
डिम्ब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चों से।

(ख) माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मन का डार दे, मन का मनका फेर।।

अथवा

मैया मैं नहिं माखन खायौ।
ख्याल परैं ये सखा सबै मिलि, मेरे मुख लपटायौ।
देखि तुहीं सींके पर भाजन, ऊँचे धरि लटकायौ।
हौं जु कहत नान्हे कर अपनैं मैं कैसें करि पायौ।।
मुख दधि पोंछि, बुद्धि इक कीन्हीं, दोना पीठि दुरायौ।
डारि साँटि, मुसुकाइ जसोदा, स्यामहिं कंठ लगायौ।
बाल-बिनोद-मोद मन मोह्यो, भक्ति-प्रताप दिखायौ।
सूरदास जसुमत कौ यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायौ।

(ग) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परे, स्याम हरित-दुति होय।।

अथवा

अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु, सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपुनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ इत एक तें दूसरों आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

2. सूरदास **अथवा** कबीर का साहित्यिक परिचय दीजिए। 10

3. घनानंद की कविताओं की विशेषताओं पर प्रकाश कीजिए।

अथवा

बिहारी की काव्य-भाषा का परिचय कीजिए। 10

4. 'आः धरती कितना देती है'— कविता का सार लिखिए।

अथवा

'नर हो, न निराश करो मन को'— कविता का उद्देश्य लिखिए। 10

6. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए:
(i) हिन्दी का भौगोलिक विस्तार
(ii) हिन्दी की बोलियाँ
(iii) आदिकालीन हिन्दी साहित्य
(iv) संत काव्य की प्रमुख विशेषताएँ
(v) द्विवेदी युगीन कविता
(vi) प्रगतिवाद। $5 \times 3 = 15$